ऋग्वेद की चैतन्यदायी उषा

डॉ. मो. दि. पराडकर

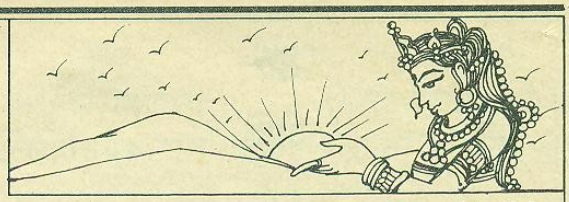

ऋग्वेद विभिन्न देवों की वन्दना करनेवाले सूक्तों का समूह है। इन सूक्तों में उषा देवी की प्रशंसा करने वाले सूक्तों को स्वतंत्र स्थान प्राप्त है। ऋग्वेद के ऋषियों की प्रतिभा प्रकृति की भव्यता एवं रम्यता का अनुभव कर के विस्मित होकर उस का सृजन करने वाले 'सिरजनहार' के प्रति सराहना भरी शब्दरूपी आदरान्जलि समर्पित करती थी और इसी से सूक्तों का जन्म होता था। 'अंधेरे से प्रकाश की ओर, निद्रा से जागृति की ओर तथा नैष्कर्म्य से कर्मशीलता की तरफ ले जाने वाली उषा की सराहना करने वाले वैदिक सूक्तों में प्रतिभाशाली विप्रों ने प्रकृति के प्रति अपने अनन्त आकर्षण को मनोहर शब्दरूप प्रदान किया है। उषा इन विप्रों को गगनाङ्गण में पदन्यास करने वाली कमनीय नृत्याङ्गना या नर्तकी प्रतीत होती है, उसे वे 'श्रेष्ठं ज्योतिमां ज्योतिः' मानते हैं और समूचे विश्व को आलोकित करने वाली इस देवी का उद्देश्य है किसी को सामर्थ्य प्रदान करना, किसी को कीर्ति से विभूषित करना तो किसी और की मनोरथों की पूर्ति करना तो किसी व्यक्ति को उस के आदर्श को जीवन में उतारने की प्रेरणा प्रदान करना।

क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीया इष्टये त्वमर्थमिव त्वमित्यै।
विसदृशा जीविताभि प्रचक्ष उषा अजीगर्भुवनानिन विश्वा॥

कोई अचरज नहीं कि उन्होंने उसे वह मघोनी याने उदार आकाश कन्या की संज्ञा प्रदान माना जो आनन्दित करने वाले रथ पर (चन्द्ररथा) आरूढ होकर प्रतिदिन आकाश में अवतीर्ण हो और समूचे संसार को आलोकित करे। यह दयावती (सूनरी) देवी जब नभ में उदित होती है तब पूरे विश्व की आँखें उसी की ओर लगी होती हैं (विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे १.४८.१०) और वैदिक ऋषि देवों को अंतरिक्ष से उन के यज्ञों की ओर ले आने का उत्तरदायित्व उसी पर डाल देते हैं।

माना कि उषा वैसे स्वर्गकन्या एवं स्वर्ग प्रिया (१.४६.१) है किन्तु वह 'मनुषी' होने के नाते मानवों के लिए हितकारक भी है। मानवों के लिए अप्रिय अंधकार का नाश करने वाली उषा बुरे स्वप्नों को नष्ट कर के स्वर्ग के द्वार खोल देती है और अँधरे में छिपी हुई संपत्ति को प्रकाश में ले जाती है (तमसा मगूलहा वसूनि आविष्कृण्वती(। प्रतिदिन आकाश में अलग अलग रूप धारण कर के अंतरिक्ष को आलोकित करने वाली उषा को उदार दाताओं से प्रेम है, वास्तव में वही देवों में औदार्य को जगाती है और इसीलिए ऋषियों में उसे 'वरुणस्य जाति' (माने वरुण की रिश्तेदार) कहा लेकिन इसी वजह से पापाचरण करने वाला उस के मार्ग से दूर हटा जाता है। वरुण अगर 'ऋतावान्' और 'धृतवत्' है तो यह भी ऋत के अनुसरण में रुचि रखती है (ऋतस्य रश्मिमनुयच्छ माता है और इसलिए उस की प्रार्थना में भी वैदिक ऋषि 'भद्रं भद्रं ऋतमस्मासु देहि' याने "हमारे मन में कल्याणकारक विचार सदैव रहें" यही कहने की सावधानी रखते हैं।

हर्ष के साथ उषा का स्वागत करनेवाले वैदिक ऋषि एक ओर प्रकृति से विशुद्ध अनुराग रखने वाले सौन्दर्य के उपासक हैं तो दूसरी ओर 'स्वर्जनन्ती' याने प्रकाश को जन्म देनेवाली उषा की वन्दना करने वाले में विप्र प्रकाश के, ज्ञान के चिरयुवा साधक प्रतीत होते हैं जिन्हें यह संसार भी मधुर एवं रोचक प्रतीत हुआ था। इसीलिए वे कह उठे 'मधु नक्तोषासः, मधमुत् पार्थिवं रजः, मधु धौरस्तु नः पिता मतलब' "रातें सुहावनी हैं, उषाएं मधुर हैं, पृथ्वी की धूलि भी मधुर है, आकाश मधुर है और पिता भूलोक भी मधुर है।" उषा से सम्बन्धित वैदिक सूक्तों ने विषय में स्वामी शर्वानंद ने अपनी पुस्तक (Cultural Heritage of India Part—I) उचित ही लिखा "भारतीय आर्य प्रकृति की भव्योदात्त रम्यता में विहार करनेबाले व्यक्ति थे। हिमालय के ऊँचे बर्फाच्छादित शिखर, मनोहर एवं विस्तिर्ण हरेभरे शाद्वल, प्रचण्ड नदियाँ, तीनों ओर से पृथ्वी को घेरनेवाले विशाल सागर आदि का उन के मनपर चिरंतन प्रभाव पड़ा और मनकी बालसदृश सरलता के कारण प्रकृति की अद्भुत घटनाओं में उन्हें चिरंतन तत्त्व का उसके प्रतीकों का साक्षात्कार हुआ और विस्मय एवं आदर के साथ चकित होकर उन्होंने दिव्यता को जो काव्यरूप व आदरान्जलि अर्पित की उसी का नाम ऋग्वेद है।"